रिकॉर्ड :– तुम्हारे बुलाने को जी चाहता है.... ॐ पिताश्री 11/10/62

ओम् शान्ति। जिस भगवान को भक्त याद करते हैं, भगवान तो ज़रूर एक ही होगा। नहीं तो भक्त मूँझ पड़ते हैं। एक को न पकड़ने से मनुष्य अनेकों को भगवान समझते रहते हैं; इसलिए दुनिया का सूत मुँझा हुआ है। ड्रामा में सूत मूँझा हुआ ही निमित्त है, जबकि फिर बाप आकर समझावे। गाया भी हुआ है– कहे गिरधर कवि राय। अब गिरधर और कवि, कृष्ण को गिरधर कहते हैं, फिर उनको कवि भी कहते, मुरली बजाते हैं; परन्तु कृष्ण तो भगवान नहीं ठहरा। कृष्ण को कवि नहीं कह सकते। वहाँ कविता अर्थात् ज्ञान की दरकार नहीं रहती। तो उस बाप को तुम याद करते हो कि बाबा आओ, आकर सुनाओ, जो सुनकर फिर हम भी सुना सकते हैं। तो ज़रूर सबको सुनाना पड़े। उन सतसंगों आदि में सुनाने वाला एक ही रहता है। कहाँ भी जाओ, एक बैठ सुनावेंगे। कोई न कोई वेद–शास्त्र, गीता आदि वो ही बैठ सुनावेंगे। ऐसे नहीं औरों को भी सीखकर और फिर सुनाना है, एक ही गुरु बनकर बैठते हैं, दूसरे गुरु बनते ही नहीं हैं। तुम तो कहते हो– बाबा, हम आपसे सुनकर फिर औरों को सुनावें। धंधा करते हो ना! कितने सेन्टर्स खुले हैं! सभी को सेन्टर खोलना पड़े; क्योंकि तुम हो सुखदेव के बच्चे सच्चे व्यास। तो सभी को व्यास बन कथा सुनानी पड़े। जो कथा न सुनावे, उनको दानी कैसे कहेंगे! यह है अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान। दान न करे तो नई दुनिया में ऊँच पद भी न मिल सके। अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान करने के कारण ही भारत की महिमा है। यहाँ दान–पुण्य बहुत करते हैं। बच्चे जब बैठकर किसको सुनाते हैं तो कोई शास्त्र आदि नहीं पढ़ते। दुनिया में तो सभी शास्त्र ही सुनावेंगे। यहाँ शास्त्र की बात नहीं। अभी जो निराकार बाप सुनाते हैं, उनके तुम पहले तो बच्चे बने; क्योंकि पहले–2 है वो बाप, फिर टीचर–गुरु। पहले बाप के पास जन्म होता है, फिर टीचर का सहारा मिलता है, फिर अन्त में गुरु का सहारा लिया जाता है। अभी तुम सभी छोटे–बड़े के पिछाड़ी हैं, तो ज़रूर गुरु चाहिए। कोई शुरू में गुरु करते हैं, कोई पिछाड़ी में करते हैं। पहले–2 तो बाप का बनना है, फिर कमाई के लिए पढ़ना है, पीछे है भगवान से मिलने लिए गुरु करना। यहाँ तो वो ही बाप–टीचर–सत्गुरु है। यह कोई भी मनुष्य की बुद्धि में नहीं है। भल कहते हैं– हेविनली गॉड फादर; परन्तु यह बाप ही सत्गुरु है– यह कब ख्याल में न आवेगा। फादर किसका सत्गुरु नहीं बन सकता। हाँ, किसका फादर ही फिर टीचर बन सकता है। बाकी फादर गुरु नहीं हो सकता। तो तुम जन्म–जन्मांतर गुरुओं को, शास्त्रों को याद करके आए हो। अब तुमको याद करना है निराकार आत्माओं के बाप को। तुम जब भाषण भी करते हो तो तुम्हारी बुद्धि में याद बाप की रहती है। न वो कोई शास्त्र उठाते हैं, न हमको कोई शास्त्र उठाने पड़ते हैं। पहले बच्चों को याद करना है बाप को। बाबा जब बैठते हैं तो क्या कोई गुरु को याद करते हैं वा शास्त्र को याद करते हैं? नहीं, याद करते हैं शिवबाबा को। वो ही ज्ञान का सागर है, चेतन है। शास्त्र भल अनेक हैं; परन्तु सागर तो एक ही है। वो ब्रह्माण्ड, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन की आदि–मध्य–अंत का सभी राज़ समझाते हैं कि मैं कैसे रचना रचयिता(रचता) हूँ। पहले–2 सूक्ष्मवतन रचयिता(रचता) हूँ। जब तुम जाते हो, तुम वैकुण्ठ में भी जाए रास आदि करते हो। उनको रचना कही जाती है। सूक्ष्मवतन प्रैक्टिकल में रचा है। वैकुण्ठ आने वाला है, जिसके लिए तुम पुरुषार्थ करते हो। वहाँ की रसम–रिवाज़ सब कुछ बच्चों को मा(लूम) है। वहाँ की भाषा भी उन्हों पास लिखी हुई है। वो कोई संस्कृत नहीं है। हरेक रजवाड़े की भाषा अपनी होती है। गाँव–2 की भाषा अलग है। अनेक भाषाएँ हैं। सतयुग में एक धर्म है तो ज़रूर भाषा भी एक होगी। भाषाओं आदि का कोई झगड़ा नहीं। यहाँ तो देखो कितना झगड़ा है। अब इन हंगामों को कौन मिटावेगा? हम बाबा के बच्चे मिटावेंगे। इसको कहा जाता है– आत्मा का शुद्ध अहंकार ।

इन भाषाओं आदि के कारण इतना जो झगड़ा हो पड़ा है, उनको हम मिटावेंगे। बाबा भी कहते हैं– गृहस्थ व्यवहार में रहते तुमको इतना नशा धारण करना है। बरोबर हम निमित्त बने हुए हैं भारत इनपर्टीकुलर और दुनिया इनजनरल के लिए। खास और आम– इन अक्षरों से ही अर्थ सिद्ध होता है। खास भारतवासियों के लिए है जीवनमुक्ति और आम दुनिया के लिए है मुक्ति। यहाँ खास सन्मुख आए हैं। मुक्तिधाम में बहुत ढेर जावेंगे; क्योंकि सभी का खेल पूरा होना है। भंभोर को आग लगेगी, कैलेमिटीज़ आवेंगी, तो जो भी सभी जीव–आत्माएँ पार्ट बजाने आई हैं वो वापिस जावेंगी। कितनी आत्माएँ आती हैं। देखो, यह सब कितना विचार रखना पड़ता है। शुरू से लेकर अंत तक आते ही रहते हैं। तुम जानते हो, ऊपर में निराकारी झाड़ है, उनमें नम्बरवार सभी को आना है। क्रिश्चियन धर्म की भी अपनी माला होगी, जो वहाँ से नीचे आते रहेंगे। बाबा यहाँ सिजरा भी बनाय रखेंगे। बाप के बच्चे, फिर उनके बच्चे– ऐसे सिजरा होता है। बिरादरी बनाते हैं ना! हमारी है बेहद की बिरादरी। सबमें ब्रदर्स–सिस्टर्स हैं। उन्हों का फिर बड़ा सिजरा चाहिए। यह अपनी विजयमाला है। क्रिश्चियन धर्म की भी कितनी बड़ी माला है। एक क्राइस्ट से क्रिश्चियन भाई बहुत निकले हैं। अब वृद्धि कितनी होती जाती है। आते हैं और पार्ट बजाने लग जाते हैं। बाबा हमको अब बेहद की बुद्धि दे रहे हैं। ज्ञान सागर बाबा हमको भी ज्ञान सागर बनाते हैं। नम्बरवार तो ज़रूर होंगे। सागर, सागर है; नदियाँ, नदियाँ हैं; नाले, नाले हैं। बाबा कहते– इन वेद–शास्त्र आदि पढ़ने से तुमको क्या मिलेगा? कुछ भी नहीं। तुमको ज्ञान सागर से सब कुछ मिलता है, तो ज्ञान सागर पास आना चाहिए। कोई–2 अच्छा आदमी आता है तो हम उनको कहते हैं– तुमको अगर शौक है नॉलेज का और कोई में आँख नहीं डूबती है तो तुमको यहाँ आना पड़ेगा, अगर समझने चाहते हो कि गॉड कैसे पढ़ाते हैं। यह बातें और कोई समझ न सके। गॉड तो कहा ही जाता निराकार बाप को। शिवप्राण(पुराण) में भी शिव का चित्र साकार में दे दिया है और साथ में पार्वती दे दी है। चित्र बहुत ही नुकसानकार हो गए हैं। तो उन पर केस करना चाहिए ना! जिस प० को कहते– अजन्मा, पुनर्जन्म रहित, वो फिर जन्म कैसे लेंगे? ब्र०वि०शं० तो हैं सूक्ष्मवतन में। ब्रह्मा की रात और दिन कहा जाता है तो ज़रूर वो पुनर्जन्म लेते होंगे। ब्रह्मा प्रजापिता है तो ज़रूर ब्राह्मण पैदा करते हैं। वो ही ब्रह्मा पुनर्जन्म में आते हैं। कृष्ण ही फिर 84 जन्म में आते हैं। अच्छा, विष्णु भी तो यहाँ आते हैं, दो रूप में तो वो भी जन्म–मरण में आते हैं अर्थ सहित। राज़ को समझते हो ना! ब्रह्मा भी यहाँ हुआ, विष्णु भी यहाँ हुआ, पालना के लिए दो रूप का सा० होता है। ब्रह्मा और शंकर दोनों बूढ़े दिखाते हैं। विष्णु का रूप कितना सजा–सजाया है। इनका अर्थ हम जानते हैं। पालना करने वाले ल०ना० ज़रूर हीरों से सजे हुए होंगे। शंकर तो है सूक्ष्मवतन में। वो निमित्त बना हुआ है। चार भुजा उनको भी दे देते हैं। वो सिद्ध करते हैं– प्रवृत्तिमार्ग। बाकी कुछ है नहीं। वहाँ क्या बैठ करेंगे! सूक्ष्मवतन में ज्ञान सुनाने की तो दरकार नहीं। ज्ञान तो यहाँ मिलता है। क्यों? यहाँ ही बेड़ा डूबा है। सत्य नारायण की कथा यहाँ सुनानी होती है। बाबा जो सत्य है, वो सत्य नारायण की कथा सुनाए नर से नारायण बनाते हैं। वो झूठे ब्राह्मण कैसी कथाएँ सुनाते हैं और तुम देखो कैसी सुनाते हो! मनुष्य, मनुष्य को गीता कैसे बैठ सुनाते हैं और भगवान खुद गीता कैसी सुनाते हैं! रात–दिन का फर्क है। तो बच्चे याद करते हैं कि बाबा आओ तो हम ज्ञान मुरली सुनकर सदैव हर्षित रहें। सारी दुनिया याद करती है; क्योंकि सभी तरफ आफतें हैं। सभी बुलावेंगे– बाबा, आकर शान्ति स्थापन करो। शांतिधाम तो निराकारी दुनिया है। बाकी यहाँ अशांति इसलिए है; क्योंकि लड़ना–झगड़ना होता है। सतयुग में कोई भी लड़ते–झगड़ते नहीं; इसलिए वहाँ शांति रहती है। सतयुग में है शांत, कलियुग में है अशांत। वो शरीर के साथ ही होती है।

कई लोग चाहते हैं– मोक्ष हो जाए, फिर आवें ही नहीं; क्योंकि वो ड्रामा को नहीं जानते। ड्रामा में तो सभी बँधायमान हैं। बाबा कहते हैं– मैं भी बँधायमान हूँ। तुम बच्चों को फिर आकर राज्य–भाग्य देता हूँ। फिर भक्तिमार्ग में भी जो जिस भावना से, जिस देवता की पूजा करते हैं, तो उनकी मनोकामनाएँ पूरी करता हूँ। समझो, कोई ल०ना० की वा कृष्ण की पूजा करते हैं, तो वो जन्म–मरण में आ गए। कृष्ण तो सतयुग में था, फिर वो 84 जन्म भोग अभी अन्तिम जन्म में यहाँ बैठे हैं। वो जड़ मूर्ति में भावना रखते हैं। तो भावना का भाड़ा चित्र नहीं देंगे, वो फिर भी भगवान देंगे। आगे समझते थे, कृष्ण ही फल देते हैं। बाबा कहते हैं– ठिक्कर के चित्र में क्या रखा है! भावना का भाड़ा मैं ही देता हूँ। संदेशियों को दिखलाते हैं, भक्तों को मैं कैसे सा० कराता हूँ। वो गदगद हो जाते हैं; परन्तु उनको ज्ञान तो मिलता नहीं। बाबा कहते हैं– भक्तों को मैं राज़ी करता हूँ। तो बाप को और शिक्षक को याद करना पड़े। एक को याद करने से तीनों वर्से मिलते हैं। तो जो इतना भारी वर्सा देते हैं उनको याद करना पड़े ना! सिमर–2 सुख पाओ। कलियुग में तो दुख ही दुख है। अब बुद्धियोग चलाना चाहिए बाबा के पास– परदेशी बाबा है, हमको भी वहाँ जाना है। वो डायरैक्ट सभी आत्माओं को कहते हैं– मेरे लाडले बच्चे, सिमर–2 सुख पाओ। कहते हैं– बाबा, कितना जन्म सुख पावेंगे? बाबा कहते हैं– 21 जन्म। मुझे याद करने से ज़रूर तुमको सुखधाम याद आवेगा। ऐसे कोई भी सिमरण नहीं करावेंगे, जो सुख अर्थात् वर्से का भी फिर सा० करावें। गुरुनानक को याद करेंगे, प्राप्ति क्या, उनका वर्सा क्या है! कृष्ण को याद करे, वर्सा तो मिल न सके; क्योंकि वो कोई बाप नहीं है। यह तो बाप वर्सा देने वाला है। बाप एक होता है। तो सिमर..... सुख पाओ ... वर्से का। तो अब तुम अर्थ सहित समझते हो। बाबा कहते हैं– मनमनाभव, मद्याजीभव; परन्तु माया भी कम न है। अगर हम इस समय श्वासों श्वास याद में टिक जावें तो फिर यह शरीर न रहे, फिर तो स्वर्ग चाहिए। इस समय हम टिक न सकेंगे। घड़ी–2 भूल जावेगा, कितनी भी कोशिश करो। अभी तो नई दुनिया बनने में अजन देरी है। जब प्रकृति सतोप्रधान बन जावेगी, सभी खत्म हो जावेंगे, तब फिर तुम नई दुनिया में आवेंगे। अभी तो त(त्व) भी पतित हैं। यह राज़ कोई शास्त्रों में नहीं है। शास्त्र तो बाद में बनते हैं। गीता बरोबर भगवान ने सुनाई थी प्रैक्टिकल में। शास्त्र तो पीछे बनते हैं। जैसे क्राइस्ट ने आकर अपना धर्म स्थापन किया, उसी समय उनका शास्त्र कहाँ से आए? जब उनकी संख्या बहुत हो, फिर शास्त्र लिखने वाले भी हों। छपने लिए मशीन आदि भी तो चाहिए। तो वो सभी बाद में बैठ जाते हैं। जब उनके आधा समय बाद फिर भक्तिमार्ग शुरू होगा तब क्राइस्ट का बाइबल निकलेगा। तो शास्त्र कोई फट से नहीं निकलते। जब बहुत–2 वृद्धि हो जाती है, उनका भक्तिमार्ग होता है, बाद में शास्त्र बनते हैं। तो हमारे भी आधा कल्प बाद शास्त्र निकलते हैं, जो फिर हम पढ़ते हैं। सतयुग में शास्त्र की दरकार नहीं, न कोई मंदिर–मस्जिद होती है। भक्ति माना वेद–शास्त्र पढ़ना, भटकना, धक्का खाना। अब बाबा आकर हमको भटकने से बचाते हैं। बाबा कहते हैं– आधा कल्प तुम भटके हो। तुम बहुत भटके हो, तो उनको ही भगवान मिलना चाहिए ना। ज्ञान न है तो भक्ति मीठी लगती है। जब ज्ञान मिला है तो भक्ति मीठी नहीं लगती। भक्ति में है झूठ। बाबा फिर आकर सच बताते हैं। सूँड वाला गणेश आदि कोई होता नहीं। बाबा आकर सब सच बताते हैं। सदैव याद करना चाहिए शिवबाबा को। तुम्हारा बुद्धियोग वहाँ रहना चाहिए, जिसका सुनकर तुम खुश होते हो। फिर औरों को भी तुम आप समान बनावेंगे। यह है तुम बच्चों की फर्ज़ अदाई। बाबा भी आते हैं फर्ज़ अदाई करने, तो बच्चों को फिर और(औरों) को सुनाने की फर्ज़ अदाई करनी है। तो ज़रूर दुकान का मालिक बनना पड़े। गद्दी पकड़ने वाला चाहिए। बाबा यह भी परीक्षा लेते हैं कि देखें, गद्दी सम्भालने लायक बने हैं वा नहीं।

बाबा की मुरली बाहर भी बच्चों पास जाती है। मुरली पढ़ने से ज्ञान का नशा चढ़ेगा। ज्ञान से अज्ञान का सारा पता पड़ जाता है, हम कितने अज्ञानी थे! मनुष्य अपन को बहुत ज्ञानी समझते हैं; परन्तु हैं एक भी नहीं; क्योंकि ज्ञान से सद्गति तो दे न सकते। गीता में है ज्ञान, भागवत में है चरि(त्र); परन्तु हमको चरित्र से कोई पद नहीं मिलेगा, पद मिलेगा ज्ञान से। चरित्र कोई काम के नहीं। ज्ञान की धारणा होती है, चरित्र का सा० होता है। शिवबाबा का क्या चरित्र है? गुप्त सा० कराना, दिखलाना। बाकी ऐसे थोड़े ही है, भगवान ने गोपियों के चीर हरे। यह सब है एडल्ट्रेशन। तो उन्हों पर केस चलाना पड़े। उन्हों को फिर बाबा की बहुत कड़ी सज़ा खानी पड़ेगी। साधु तो बहुत हैं। म(थु)रा में भी आते हैं। कोई–2 अनुभव भी बहुत अच्छा ऐसा लिखते हैं, जो और कोई बी.के. लिख न सके; परन्तु बाबा कहते हैं– पूरा निश्चय नहीं। अगर निश्चय होता तो बाबा से मिलने सिवाय एक सेकण्ड भी रह न सके। इसलिए बाबा नापास कर देते हैं। निश्चय हो बाबा से वर्सा लेना है तो उड़कर गोद में पड़ जाना चाहिए। बाबा को निश्चय हो गया, चलते राही ने पकड़ लिया। अचानक सा० होने लगे, फिर इन बातों को समझने लिए बनारस में जाकर रहना पड़ा कि यह क्या होता है? उस समय इतनी समझ न थी। अब तुम बच्चे बहुत भाग्यशाली हो जो पीछे आए हो। तुमको बना–बनाया माल–तंत मिलता है; जैसे पहले मोटर बनाने में टाइम लगता है, फिर तो मिनट अ मोटर। तुम्हारी भी बहुत प्रजा बननी है। तुम्हारा जब प्रभाव निकलेगा तो फिर झट कलियाँ से फूल बनते जावेंगे। इतने आवेंगे जो तुमको फुर्सत न मिलेगी। फिर समझाने वाले भी बहुत निकल पड़ेंगे। विलायत में भी नॉलेज जानी है। हेविनली गॉड फादर कहते हैं तो उनका भी मालूम पड़े ना; परन्तु इतना समय न मिलेगा जो योग में रह और विकर्म विनाश कर सकें। विकर्म विनाश होने में टाइम लगता है। सभी जल्दी नहीं आवेंगे। हम भोग लगाते हैं तो भी याद शिव को करेंगे। निराकारी दुनिया में तो वासना ले न सके। इसलिए बच्चियों की सूक्ष्मवतन में मुलाकात होती है। यह भोग आदि सूक्ष्मवतन में इमर्ज होता है, न कि मूलवतन में। इसको सा० कहा जाता। ऐसे नहीं थाली कोई वहां चली जावेगी। यह सा. होता है, जिसको जादूगरी कहा जाता। इनसे ज्ञान का कोई ताल्लुक नहीं। यह है शिव की आरती, जिसमें तन–मन–धन सब स्वाहा करना होता है। बाबा आकर सभी की ज्योत जगाते हैं। वो लोग फिर स्थूल रूप ले गए हैं। हम भोग पर बैठेंगी, बुद्धि में याद शिवबाबा रहेगा, शिवबाबा सूक्ष्मवतन में आकर वासना लेंगे। सूक्ष्मवतन है जंक्शन ब्राह्मणों और देवताओं का। दोनों वहाँ जाकर मिलते हैं। तो भोग समय यह ख्याल रहता है– बाबा परमधाम छोड़ आया होगा, सूक्ष्मवतन में भोग स्वीकार करता होगा। अच्छा। शिवबाबा दाता है। ऐसे कोई मत समझे, हम देते हैं। भक्तिमार्ग में रिटर्न थोड़ा देते हैं। अभी तो बहुत देते हैं। कब यह ख्याल न लाना, हम देते हैं। यह तो बड़ा भारी प्रिम्यम(प्रीमियम) है। यह है जन्म–जन्मांतर का अ...., कचहरी भी क...ते हैं। (बच्चों को) बहुत मीठा बनना है। बाबा मीठे ते मीठा है। उनको फॉलो करना पड़े। (मंगल) से जितना काम कर सकते हैं उतना ..... नहीं। मीठे के सामने कोई कड़वा ... नहीं। कोई कड़ा बोले तो बाबा की याद में मुस्करावेंगे तो बाबा उनकी बुद्धि को भी नर्म कर देंगे। अपन यात्रा पर हैं। तो जहाँ जाते हैं वो याद रहेगी ना। सिर्फ याद क(रना) है, हम शांतिधाम जा रहे हैं, फिर सुखधाम आवेंगे। इसको ज्ञान और योग कहा जाता है। ॐ